BA Part II (Sub/GEN)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Sociology

बेरोजगारी (Unemployment) ⇒ निर्धनता एवं बेरोजगारी दोनों अन्तर्सम्बन्धित अवधारणाएं हैं। बेरोजगारी निर्धनता का एक बड़ा कारण है तो निर्धनता बेरोजगारी का एक बड़ा दुष्परिणाम। भारत ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों को विशेषकर अर्द्ध-विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों को भी बेरोजगारी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। बेरोजगारी एक व्यापक और आर्थिक सामाजिक समस्या है। व्यक्ति को एक समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में भिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है। इनमें परिवार के सदस्यों के लिए धनोपार्जन करना अति महत्वपूर्ण भूमिका है। जब व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से काम करने के योग्य होता है फिर भी वह कार्य प्राप्त नहीं कर पाता है तो उसे बेरोजगारी के रूप में विवेचित किया जा सकता है। बेरोजगारी की स्थिति किसी न किसी रूप में प्रत्येक समाज में पायी जाती है, लेकिन कुछ समाजों में जहां व्यक्तियों का बहुत बड़ा भाग बेकार हो जाता है तब बेरोजगारी विकट एवं गम्भीर, आर्थिक व समाजशास्त्रीय समस्या के रूप में उभर कर सामने आती है।

औद्योगीकरण एवं नगरीकरण ने जहां एक ओर रोजगार के नये साधन जुटाये हैं, वहीं दूसरी ओर इन्होंने बेरोजगारी को भी प्रोत्साहित किया है। मशीनीकरण के कारण उत्पादित वस्तुओं के प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र में न टिक पाने के कारण छोटे-छोटे एवं लघु कुटीर उद्योग नष्ट हो गए हैं, जिससे लाखों व्यक्ति काम की तलाश में गांव से नगरों की ओर पलायन करने लगे हैं, मशीनें ही कम समय में अधिक श्रमिकों का काम पूरा कर देती हैं। परिणामस्वरूप श्रमिक बेरोजगार हो जाते हैं। औद्योगीकरण ने पूंजीवाद के विकास में योग दिया है। संपत्ति का असमान वितरण एवं समाज में आर्थिक-सामाजिक विषमता को बढ़ावा देने से सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का सूत्रपात हुआ इसमें बेरोजगार व्यक्ति कार्य करने के योग्य होते हुए भी कार्य प्राप्त न कर पाने के कारण कुंठित, निराश एवं हीनता से ग्रसित हो जाता है, जो कि अन्य मानसिक एवं अन्य सामाजिक समस्याओं जैसे- अपराध आदि का जनक होता है।